RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

महा शिवरात्रि विशेष 2026

वर्ष-13, हिन्दी (मासिक), महाशिवरात्रि विशेशांक- 2026, पृष्ठ 04

परमपिता परमात्मा शिव दे रहे 'दिव्य ज्ञान'

ब्रह्माकुमारीज़ में रखी जा रही स्वर्णिम दुनिया की नींव

सनातन संस्कृति का जयघोष

ब्रह्माकुमारीज में स्वर्णिम दुनिया की नींव रखी जा रही है और इसका जयघोष आज से 89 वर्ष पूर्व हो चुका है। इस वर्ष 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती मनाई जा रही है। सृष्टि के रचनाकार, स्वयं परमपिता शिव परमात्मा इस महापरिवर्तन की गाथा लिख रहे हैं। परमात्मा के दिव्य मार्गदर्शन और निर्देशन में परिवर्तन की यह मुहिम जारी है। परमात्म ज्ञान, पालना, शिक्षा और राजयोग मेडिटेशन का कमाल है कि आज 25 लाख से अधिक लोग इस दिव्य कार्य से जुड़कर अपना जीवन सफल कर रहे हैं। इन्होंने न केवल परमात्मा की सूक्ष्म उपस्थिति को महसूस किया है वरन इस महान कार्य के साक्षी भी हैं। इनका तपस्वी जीवन समाज के लिए प्रेरणा है। महापरिवर्तन और कल्प की पुनरावृत्ति के संधिकाल को स्पष्ट करती **शिव आमंत्रण की विशेष रिपोर्ट....**

राजयोग की शिक्षा देकर परमात्मा रच रहे हैं नया संसार

ऐसे रखी जा रही है नवयुग की आधारशिला...

नवसृजन का कार्य एक प्रक्रिया के तहत ईश्वरीय संविधान के अनुसार होता है। जैसे एक विद्यार्थी विद्या अध्ययन की शुरुआत पहली कक्षा से करता है और फिर वह साल दर साल आगे बढ़ते हुए एक दिन विशेष योग्यता प्राप्त कर न्यायाधीश, आईएएस, सीए, पायलट, शिक्षक, वैज्ञानिक और पत्रकार बनता है। इसी तरह निराकार परमात्मा ईश्वरीय संविधान के तहत शिक्षा देकर स्वर्णिम दुनिया, नवयुग के स्थापना की आधारशिला रखते हैं। स्वयं परमात्मा ही नर से श्रीनारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने के लिए राजयोग ध्यान सिखाते हैं। राजयोग को चार मुख्य विषय (ज्ञान, योग, सेवा और धारणा) में बांटा गया है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आज लाखों लोग अपना दाखिला कराकर पढ़ाई को पूरी लगन, मेहनत, त्याग और तपस्या के साथ पढ़ रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप मानव के व्यक्तित्व में दिव्यगुण, विशेषताएं और दिव्य शक्तियां स्वाभाविक रुप से झलकने लगती हैं। चार विषयों में प्रवीण होने के बाद आत्मा अपनी संपूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर उड़ जाती है।

शिव बाबा की दिव्य अनुभूति मैंने की है

परमपिता शिव परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव बाबा का ध्यान लगाती हूं। परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं। हमारा आत्मबल बढ़ता है। क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सत् चित आनंद स्वरूप हैं। लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गए हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्द ही इस दुनिया में स्वर्णिम युग आएगा।

– द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत

अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता

ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। इसलिए अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

श्रीमद्भ भगवत गीता से लेकर महाभारत, शिवपुराण,रामायण, यजुर्वेद, मनुस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण पर परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहां तक कि शिवपुराण में स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

परमात्मा ने गीता में कहा है मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा...

शिव आमंत्रण, आबू रोड। गीता में भगवान के महावाक्य हैं 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सतधर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स तू मन को मुझ में लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि वह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाते हैं? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा राजयोग की शिक्षा के आधार पर देते हैं।

परमात्मा कहते हैं- वत्स! तू मन को मुझ में लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा। जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता है, उसी तरह आत्मा पर कई जन्मों पर चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, सतत् परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पापकर्म की मैल धुलती जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा, परमात्मा की शक्ति से संपूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

■ परमात्मा ने श्रीमद्भगवद गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते हैं। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं।

■ रामायण में लिखा है कि- बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुंह के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

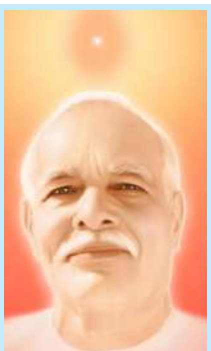

ब्रह्मा मुख से देते हैं दिव्य ज्ञान

शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान सागर हैं तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरुप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्माजी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान?

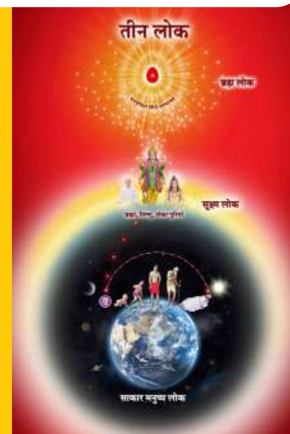

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं- स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात परमधाम।

स्थूल लोक... : मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता हैं, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना- परम आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्मलोक... : सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। उस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम... : सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अतः वहां न सुख है, न दुःख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।

सबने गाई ज्योतिर्लिंग की महिमा

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमसत्ता निराकार परमात्मा की सत्ता स्वीकारी

शिव आमंत्रण, आबू रोड

विश्व के प्रायः सभी धर्मां के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं परमात्मा एक है। सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद हैं, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिंह्न है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।

रावण को हराने श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकरजी भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पांडवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहां श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम् में शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है- एक ओंकार निराकार तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जीजस ने कहा गॉड इज लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्लिंग परमात्मा का यादगार और स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम्

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्वभर के सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुन: नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं अपनी पहचान बताते हैं। परमात्मा संदेश दे रहे हैं कि जीवन में सच्चे गीता ज्ञान को धारण कर राजयोग मेडिटेशन को अपनाने से सर्वदुखों से छूट जाएंगे। **- राजयोगिनी मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू**

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रुप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दु:खों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

21 जन्मों का क्या है राज

परमात्मा इस धरा पर आकर ज्ञान देते हैं और मनुष्य आत्माओं का आह्वान करते हैं कि मेरे बच्चों मुझ से योग लगाओ तो मैं तुम्हें 21 जन्मों की बादशाही दूंगा। तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए सर्व दु:खों से मुक्त कर स्वर्णिण दुनिया में ले चलूंगा। कलियुग के कलिकाल में जब मनुष्य आत्मा पापों के बोझ तले तबकर तमोप्रधान हो जाती है तो परमात्मा राजयोग की शिक्षा देकर सतोप्रधान बनने की राह दिखाते हैं। सतयुग में प्रत्येक आत्मा के 8 जन्म होते हैं, वहीं त्रेतायुग में 12 जन्म होते हैं। सतयुग और त्रेतायुग में सर्व आत्माएं सदा सुखी, आनंदमय रहतीं हैं। उस स्वर्णिम दुनिया में दूर-दूर तक दुख को नामोनिशान नहीं होता है। प्रकृति भी सुखदायी रहती है।

परमपिता शिव परमात्मा की रचना हैं- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर

शिव आमंत्रण, आबू रोड

परमपिता शिव जी के शंकरजी बेटे हैं। इस सृष्टि के विनाश कराने के निमित्त परमात्मा ने ही शंकरजी को रचा। यहीं नहीं ब्रह्मा, विष्णु, शंकरजी के रचनाकार, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च सत्ता, परमेश्वर शिव ही हैं। वह ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं।

परमपिता परमात्मा शिव 33 करोड़ देवी-देवताओं के भी महादेव एवं समस्त मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सारी सृष्टि में परमात्मा को छोड़कर सभी देवी-देवताओं का जन्म होता है।

- शिव और शंकर में वहीं अंतर है जो एक बाप और बेटे में होता है।
- शिव 33 करोड़ देवी-देवताओं के भी महादेव हैं।
- परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं।

जबकि परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शंकरजी का आकारी शरीर है। शंकरजी, परमात्मा शिव की रचना हैं। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। ध्यानमग्न शंकरजी की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं की ही प्रतीक हैं। परमात्मा शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र और तीन रेखाएं परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। इस सृष्टि के सारे संचालन में इन तीनों देवताओं का ही विशेष अहम योगदान है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लाखों लोगों को मिला जीवन का लक्ष्य

सनातन स्वर्णिम संस्कृति को साकार कर रहीं शिव शक्तियां

हीरो के जौहरी से विश्व शांति के मसीहा का सफर...

सन् 1937 की बात है। हीरे-जवाहरात के उस समय के प्रसिद्ध जौहरी दादा लेखराज की जिंदगी सुख-शांतिमय चल रही थी। लेकिन परमात्मा को पाने की दिल में इतनी प्रबल इच्छा शक्ति और उत्कंठा थी कि उन्होंने अपने जीवन में 12 गुरु बनाए थे। वह गुरु की आज्ञा को भगवान की आज्ञा मानते थे। दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं की थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा को यह बात समझ नहीं आई।

जब वह घर पहुंचे और एक दिन कमरे में बैठे थे, तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि- **निजानन्द् स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।** इस परिचय के साथ परमपिता परमात्मा ने आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

नारी को ताज देकर शक्ति स्वरुपा बनाया...

दादा ने अपना सारा कारोबार समेटकर विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य की बहुत ही छोटे स्तर से नींव रखी। यह वह दौर था जब नारी की समाज में दशा ठीक नहीं थी। उसे दीन-हीन भाव से देखा जाता था। चूंकि परमात्मा को भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ भी करना था। नारी को शक्ति स्वरुपा के ताज से सुशोभित करने के लिए उन्होंने बाकायदा नारी शक्ति का एक संगठन बनाया, जिसे नाम दिया गया ओम मंडली। इसमें संचालन से लेकर ज्ञान अमृत देने का दायित्व नारी शक्ति को दिया। नारी के जीवन की दिशा और दशा बदलने की संभवतः इस युग का वह पहला प्रयास था। बाबा की विराट सोच ही थी कि नारी को विश्व शांति और युग परिवर्तन का कलश सौंपकर उनका हर पल मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही परमात्मा ने दादा को दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, जिन्हें हम सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहने लगे।

दिव्यगुणों की धारणा से दिव्य जीवन बनाने की साधना में जुटे

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियां शिव शक्ति बनकर सनातन स्वर्णिम संस्कृति को साकार कर रहीं हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामथ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरो कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। आत्मा का परमात्मा महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

1937 में हुई ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना

1950 में माउंट से विश्व सेवाओं का शंघनाद

1970 में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

140 देशों में राजयोग का दिया जा रहा संदेश

46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

20 लाख लोग विद्यालय के विद्यार्थी

20 प्रभागों से समाज के सभी वर्गों की सेवा

07 पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से दिए

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव आज मूर्तरूप ले रहा है...

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार 1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें ही इस संगठन के सारथी थे। 1950 में बाकायदा एक ट्रस्ट बनाकर ओम मंडली का नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा गया। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को नियुक्त किया गया, जिन्हें प्यार से सभी मम्मा कहकर पुकारते थे। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह महान संकल्प देखते ही देखते लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। इस नये और अनोखे ज्ञान को लोगों ने दिल से स्वीकारा, अपनाया और परमात्म राह पर चल पड़े। आज इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भारत सहित पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब पांच हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पावन संदेश दिया जा रहा है। 46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रुप से तन-मन-धन को परमात्म यज्ञ में स्वाहा कर सेवा में तत्पर हैं। 20 लाख से अधिक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विद्यार्थी हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् का यह भाव आज मूर्तरुप लेते हुए दिखाई दे रहा है।

14 वर्ष ज्ञान-योग की भट्ठी में तपाया...

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। भाई-बहनों को ज्ञान और योग की भट्ठी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है। इसी तपस्या का परिणाम है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड के खिताब से नवाजा गया था। वह 60 वर्ष की उम्र में विदेश की सरजमीं पर पहुंचीं और अकेले दम पर 80 देशों में आध्यात्म का परचम फहराया। 104 वर्ष की आयु में वह अव्यक्त हो गईं। लेकिन अपने पीछे संदेश छोड़ गईं कि नारी जब महान संकल्प के साथ कदम बढ़ाती है तो परमात्मा भी ऐसे बच्चों पर नाज करता है।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। यहां तक कि पशु-पक्षी भी हमारे संकल्पों के आधार पर चलते हैं। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं। सारा जीवन रास से भरपूर होता है।

क्या है राजयोग मेडिटेशन

राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता शिव परमात्मा को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं उनका मन ही मन-बुद्धि द्वारा विजुलाइज करके उनके स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करते हैं। राजयोग अंतर्जगत की यात्रा है, जिसमें हम स्व चिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं। जब हम नियमित तौर पर राजयोग ध्यान में जैसे- मैं एक महान आत्मा हूं... मैं भाग्यशाली आत्मा हूं... मैं सफलता मूर्त आत्मा हूं... मैं सतयुगी आत्मा हूं...मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है... इन संकल्पों को करते हुए जब हम परमात्मा की दिव्य शक्तियों को बुद्धि के द्वारा मन की आंखों से विजुलाइज करते हैं तो फिर हमारी आत्मा का स्वरूप, संस्कार और विचार उसी रूप में ढलने लगते हैं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

पत्र-व्यवहार का पता-

प्रधान संपादक › बीके कोमल, ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 8740060231, 9471854331

» प्रकाशक व मुद्रक : करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित
» प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र » RNI No.: RAJHIN/2013/53539